अध्याय 30

अय्यूब की वर्तमान दयनीय स्थिति

अय्यूब ने पहले कहा था, ''यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने ले लिया'' (1:21)। अय्यूब की पहले की आशिषें (अध्याय 29) और वर्तमान परिस्थिति (अध्याय 30) का अंतर इससे बढ़कर नहीं हो सकता।

''उम्र में मुझ से कम अब मुझ पर हंसते हैं'' (30:1-8)

[1]''परन्तु अब जिनकी आयु मुझ से कम है, वे मेरी हँसी करते हैं, वे जिनके पिताओं को मैं अपनी भेड़ बकरियों के कुत्तों के काम के योग्य भी न जानता था। [2]उनके भुजबल से मुझे क्या लाभ हो सकता था? उनका पौरुष तो जाता रहा। [3]वे दरिद्रता और काल के मारे दुबले पड़े हुए हैं, वे अन्धेरे और सुनसान स्थानों में सूखी धूल फाँकते हैं। [4]वे झाड़ी के आसपास का लोनिया साग तोड़ लेते, और झाऊ की जड़ें खाते हैं। [5]वे मनुष्यों के बीच में से निकाले जाते हैं, उनके पीछे ऐसी पुकार होती है, जैसी चोर के पीछे। [6]डरावने नालों में, भूमि के बिलों में, और चट्टानों में, उन्हें रहना पड़ता है। [7]वे झाड़ियों के बीच रेंकते, और बिच्छू पौधों के नीचे इकट्ठे पड़े रहते हैं। [8]वे मूढ़ों और नीच लोगों के वंश हैं जो मार मार के इस देश से निकाले गए थे।''

30:1-8 को कई दिलचस्प शीर्षक दिए गए हैं: ''नाचीज़ लोग अब अय्यूब को तुच्छ जाते हैं,''[1] ''बेकार लोगों का ठुकराया हुआ''[2] और ''उसके बेकार ठट्ठा करने वाले।''[3] एच. एच. रोअले ने कहा है:

> अय्यूब का अपमान इसलिए नहीं है कि ये लोग घृणित बहिष्कृत हैं, बल्कि इसलिए है, क्योंकि ऐसे लोग जिनके साथ अय्यूब उदारता और दयालुता के साथ बरता करता था, अब किसमत की मार उस पर पड़ने पर, उसी को मुद्दा बनाकर अपने पूर्व उपकार करने वाले को तुच्छ जानते और अपने से नीचा मानते हैं। यह इन बेकार जीवों की अकृत्तज्ञनता और अहंकार है जिसे फटकार लगाई जाती है। उनका नैतिक चरित्र उनकी नीच अवस्था से मेल खाता है।[4]

फ्रांसिस आई. एंडरसन ने टिप्पणी की है, ''अय्यूब ने सबसे निंदनीय लोगों की निंदा के लिए सबसे आदरणीय लोगों के आदर की अदला-बदली की।''[5]

आयत 1. परन्तु अब दबे कुचलों के साथ अय्यूब के व्यवहार और उसके साथ उनके व्यवहार में चौंकाने वाले अंतर को बताता है। ''**जिनकी आयु मुझ से कम है, वे मेरी हँसी करते हैं, वे जिनके पिताओं को मैं अपनी भेड़ बकरियों के कुत्तों के काम के योग्य भी न जानता था।**'' ''आयु कम'' (*tsa'ir, सेयर*) शब्द का अर्थ ''छोटा,'' ''महत्वहीन'' या

''बच्चा'' हो सकता है।[6] बहुत छोटे पद वाले नवयुवक अय्यूब का मज़ाक उड़ाते थे। ''हंसी करना'' (*śachaq, साचाक*) अपमान करते हुए हंसना।[7]

पवित्र शास्त्र में ''कुत्तों'' का उल्लेख आम तौर पर अशुद्ध पशुओं के रूप में तिरस्कार पूर्वक होता है (1 राजाओं 14:11; 21:19)। यशायाह ने चरवाहों की तुलना लालची कुत्तों के साथ की (यशायाह 56:10, 11)। किसी को ''कुत्ता'' कहना उसका अपमान था (1 शमूएल 17:43; 2 शमूएल 3:8)। परन्तु अय्यूब ने *इन लोगों के पिताओं* को *अपने भेड़ों की रखवाली करने वाले कुत्तों* जैसा भी नहीं माना!

आयत 2. पद्य का शेष भाग उन लोगों का स्पष्ट विवरण देता है जिन्होंने अय्यूब का ठट्ठा उड़ाया। **''उनके भुजबल से मुझे क्या लाभ हो सकता था? उनका पौरुष तो जाता रहा।''** TEV में इसका अनुवाद है: ''वे थके हुए लोगों का झुंड, इतने कमज़ोर थे कि मेरे किसी काम के नहीं।''

आयत 3. समाज से निकाले हुए इन लोगों का अस्तित्व दैनीय था। भोजन की कमी के कारण उनका **पौरुष** जाता रहा (*galmud, गालमुड*)। इस शब्द का अर्थ, पथरीली भूमि के लिए हो सकता है जो बंजर और वीरान हो चुकी है। यहां पर यह उन लोगों का विवरण है जो कुपोषित हैं।[8] ये लोग इतने मायूस थे कि वे जंगल में भोजन के लिए कूड़े में से ढूंढ़ रहे थे (देखें 24:5), **अन्धेरे और सुनसान स्थानों में सूखी धूल फाँकते** हुए।

आयत 4. लोनिया (*malluach, मलुआक*) शब्द पुराने नियम में केवल यहीं पर मिलता है। कुछ संस्करणों में ''साल्टवर्ट'' (एक प्रकार का समुद्री पौधा) (ASV; NEB; NJB; NJPSV) या ''साल्ट हर्ब्स'' (NIV)। जॉन ई. हार्टले ने लिखा है, ''वे एक सदाबहार पौधे *साल्टवर्ट को तोड़ते* हैं जिसे *एट्रिप्लेक्स हेलिमस* कहा जाता है जिसे इसके खारा होने के कारण केवल खतरनाक परिस्थितियों में ही खाया जाता है।''[9]

झाऊ की जड़ें अनुवादकों द्वारा डाला गया है जिसे ये निकाले हुए लोग **खाते** थे। इब्रानी धर्मशास्त्र में NASB (*lachmam, लाचमाम*) संज्ञा शब्द *lechem* (*लेचेम*) से लिया हो सकता है जिसका अर्थ ''रोटी'' या ''भोजन'' है। कुछ संस्करणों में इसे इंधन के रूप में समझा गया है (देखें RSV; NRSV; NLT; CEV), क्योंकि यह शब्द क्रिया शब्द *chamam* (*चामाम*) से लिया गया हो सकता है जिसका अर्थ ''गर्म होना'' या ''गर्मी'' है (यशायाह 47:14)। झाऊ का पेड़ कई बार गर्मी के लिए लकड़ी के कोयले के रूप में इस्तेमाल होता था (भजन संहिता 120:4)।

आयतें 5, 6. निकाले हुए लोग स्पष्टतया गांवों में लूटमार के लिए आए थे और इस कारण उन्हें चोर माना जाता था जिन्हें समाज से निकाले जाना आवश्यक होता था। सभ्यता से निकाले जाने पर वे वादियों के साथ साथ पहाड़ों की ढलानों पर स्थित गुफ़ाओं में और चट्टानों में आश्रय ढूंढ़ लेते थे (देखें 24:8)।

आयत 7. जिन्हें आश्रय के लिए गुफ़ा या चट्टान नहीं मिलती वे **झाड़ियों** और **पौधों** के नीचे टिक जाते थे। विलियम डी. रेबर्न ने लिखा है कि ''*पौधे* एक प्रकार के शाक के लिए शब्द का अनुवाद है (*charul, चारुल*) जो सुनसान इलाकों में होता है, जैसा सपन्याह 2.9. में बताया गया है। नीतिवचन 24.31 आलसी किसान के खेत में उगने वाला बताया गया है।''[10]

निकाले हुए लोगों की पुकार भूख से मर रहे लोगों की थी। लोग **रेंकते** (*nahaq, नाहाक*)

शब्द वही जो 6:5 में जंगली गदहे के "रेंकने" के लिए कहा गया है। निकाले हुए लोग सुनसान जंगलों में जंगली जानवरों की तरह भोजन की तलाश में थे (देखें 24:5)।

आयत 8. मूल भाषा में **मूढ़ों** मूलतया "मूढ़ के पुत्रों" के लिए है और नीच लोगों के वंश "नाम रहित पुत्रों" है। "प्राचीन काल के लोगों का मानना था कि नाम के इसके अपनाने वाले के आवश्यक स्वभाव का पता चल जाता है। जो भी कोई *नाम रहित* पिता वह बदनामी के सबसे निचले स्तर पर चला जाता।"[11] ऐसे-ऐसे खराब लोग अय्यूब की हंसी उडाते थे।

"वे मुझ पर ताने मारते हैं" (30:9-15)

[9]"ऐसे ही लोग अब मुझ पर लगते गीत गाते, और मुझ पर ताना मारते हैं। [10]वे मुझ से घिन खाकर दूर रहते, या मेरे मुँह पर थूकने से भी नहीं डरते। [11]परमेश्वर ने मुझे शक्तिहीन और तुच्छ बना दिया है, इसलिये वे मेरे सामने मुँह में लगाम नहीं रखते। [12]मेरे दाहिनी ओर बजारू लोग उठ खड़े होते हैं, वे मेरे पाँव सरका देते हैं, और मेरे नाश के लिये अपने उपाय बाँधते हैं। [13]जिनके कोई सहायक नहीं, वे भी मेरे रास्तों को बिगाड़ते, और मेरी विपत्ति को बढ़ाते हैं। [14]मानो बड़े नाके से घुसकर वे आ पड़ते हैं, और उजाड़ के बीच में होकर मुझ पर धावा करते हैं। [15]मुझ में घबराहट छा गई है, और मेरा रईसपन मानो वायु से उड़ाया गया है, और मेरा कुशल बादल के समान जाता रहा।"

"मूढ़ों के पुत्र" या "नाम रहित पुत्रों" (30:8) अपने फोड़ों से पीप निकालते हुए नगर के बाहर राख के ढेर पर बैठे रईस अय्यूब का ज़ोरदार अपमान थे। वे उसे अपने से नीचा मान रहे थे और अभद्र मुद्राओं तथा सीधे गालियां देते हुए अपमान जता रहे थे। होमेर हेली ने कहा, "अय्यूब द्वारा यहां दिखाई गई मानवीय नीचता से बढ़कर समावेशी और निंदनीय तस्वीर की कल्पना नहीं की जा सकती।"[12]

आयत 9. ताना (*n^{e}ginah, नगिनाह*) ठट्ठे का गीत था (भजन संहिता 69:12; विलापगीत 3:14)।[13] रॉबर्ट एल. आल्डन ने कहा, "अय्यूब उनके ताने से भरे, व्यंग्यपूर्ण गीतों का विषय था।"[14]

आयत 10. अय्यूब की डरावनी शारीरिक अवस्था के कारण **वे उससे घिन** करते थे। किसी के **मुंह पर थूकना** सबसे बड़े अपमान के जैसा था (गिनती 12:14; व्यवस्थाविवरण 25:9; यशायाह 50:6; मत्ती 26:67)। अय्यूब ने पहले एक भाषण में अफ़सोस जताया था: "उसने ऐसा किया कि सब लोग मेरी उपमा देते हैं; और लोग मेरे मुँह पर थूकते हैं" (17:6)।

आयत 11. अय्यूब को भीड़ के दुर्व्यवहार का निशाना बनने से निकालते हुए दिखाया गया है (16:12, 13 पर टिप्पणियां देखें; 20:24, 25)। परमेश्वर के उसे **शक्तिहीन** कर देने के बजाय NASB में परमेश्वर का तीर छोड़कर अय्यूब पर अपना तीर चलाना है (NKJV; NRSV; NJB); NIV में है "परमेश्वर ने मेरे कमान से तीर निकाल दिया है।" NLT में है परमेश्वर ने मेरे "तम्बू की डोरी काट दी।" ये रूपक अय्यूब की कमज़ोर हुई अवस्था को ही दिखाते होंगे (तुलना 4:21; 29:20)। **मुँह में लगाम** नहीं होने का अर्थ हर प्रकार की रोक या नियन्त्रण को हटा लेना था। जिससे यह निकम्मी भीड़ बिना किसी रूकावट के अय्यूब पर

अपशब्दों का ढेर लगा सकती हैं।

आयतें 12–14. इन आयतों में अय्यूब ने इनकी तुलना किसी विदेशी सेना द्वारा आक्रमण किए जाने वाले नगर से की। यह लाक्षणिक भाषा दिखाती है कि नीच निकाले हुओं द्वारा दुर्व्यवहार किए जाने पर अय्यूब को कैसा लगा।

''मेरे दाहिनी ओर बजारू लोग उठ खड़े होते हैं, वे मेरे पाँव सरका देते हैं, और मेरे नाश के लिये अपने उपाय बाँधते हैं'' (30:12)। ''दाहिनी ओर'' ''सामर्थ और आदर की जगह'' का प्रतीक था।[15] ''बांधते'' (*śalal, सालाल*) यहां पर घेराबंदी के कामों को दर्शाता है। 19:12 में अय्यूब ने पहले इस शब्द का इस्तेमाल किया: ''उसके दल इकट्ठे होकर मेरे विरुद्ध मोर्चा बाँधते हैं, और मेरे डेरे के चारों ओर छावनी डालते हैं''

''जिनके कोई सहायक नहीं, वे भी मेरे रास्तों को बिगाड़ते, और मेरी विपत्ति को बढ़ाते हैं'' (30:13)। सेना कई बार अपने शत्रु के लिए बच निकलना और कठिन करने के लिए कई बार सड़कें और पुल तोड़ देती थी। अय्यूब ने इन निकाले हुओं के अपशब्दों का ही अफ़सोस नहीं किया बल्कि वह इस बात से भी बुरी तरह से आहत था कि उसके बचाव के लिए ''कोई नहीं'' आया।

''मानो बड़े नाके से घुसकर वे आ पड़ते हैं, और उजाड़ के बीच में होकर मुझ पर धावा करते हैं'' (30:14)। ''नाका'' किला तोड़ने वाले हथौड़े के बार–बार के प्रहारों से शहरपनाह में होने वाला सुराख था (16:14 पर टिप्पणियां देखें)। यहां पर ''नाका बड़ा'' था जिससे सेना की टुकड़ियां इसमें से ''घुस'' सकती थीं। अय्यूब को लगा जैसे वह उस नगर के जैसा है जिस पर बार बार आक्रमण होते हैं; वह एक हारा हुआ युद्ध ही लड़ रहा था।

आयत 15. इन निकाले हुओं द्वारा अय्यूब के लिए बेलगाम अपमान लगभग सहने से लगभग बाहर ही था। वह अपना **रईसपन** और **कुशल** खो जाने के कारण बुरी तरह से **घबराहट** से भरा था (देखें 6:4; 18:11, 14; 20:25; 24:17; 27:20)। ''कुशल'' (KJV) (y^eshu'ah, *येशुआह*) शब्द का अनुवाद ''समृद्धि'' (NASB), ''सुरक्षा'' (NIV), या ''विजय की आशा'' (NEB) भी हो सकता है।

''शोक ने मुझे घेर लिया'' (30:16–23)

[16]''अब मैं शोकसागर में डूबा जाता हूँ; दुःख के दिनों ने मुझे जकड़ लिया है। [17]रात को मेरी हड्डियाँ मेरे अन्दर छिद जाती हैं और मेरी नसों में चैन नहीं पड़ता। [18]मेरी बीमारी की बहुतायत से मेरे वस्त्र का रूप बदल गया है; वह मेरे कुर्त्ते के गले के समान मुझ से लिपटी हुई है। [19]परमेश्वर ने मुझ को कीचड़ में फेंक दिया है, और मैं मिट्टी और राख के तुल्य हो गया हूँ। [20]मैं तेरी दोहाई देता हूँ, परन्तु तू नहीं सुनता; मैं खड़ा होता हूँ परन्तु तू मेरी ओर घूरने लगता है। [21]तू बदलकर मुझ पर कठोर हो गया है; और अपने बली हाथ से मुझे सताता है। [22]तू मुझे वायु पर सवार करके उड़ाता है, और आँधी–पानी में मुझे गला देता है। [23]हाँ, मुझे निश्चय है कि तू मुझे मृत्यु के वश में कर देगा, और उस घर में पहुँचाएगा जो सब जीवित प्राणियों के लिये ठहराया गया है।''

दु:ख और क्लेश की अंतिम चिल्लाहट अय्यूब अपनी बीमारी और अपने परिवार के नुक्सान से जुझ रहा था जैसे उस पर बार बार हमला करने वाला कोई बड़ा सा राक्षस हो।[16]

आयतें 16, 17. ''अब मैं शोकसागर में डूबा जाता हूँ'' अय्यूब की शक्ति के जार में से पानी उण्डेले ''जाने जैसा हो सकता है।''[17] भजनकार ने कहा ''मैं जल की नाईं बह गया, और मेरी सब हड्डियों के जोड़ उखड़ गए: मेरा हृदय मोम हो गया, वह मेरी देह के भीतर पिघल गया। मेरा बल टूट गया, मैं ठीकरा हो गया; और मेरी जीभ मेरे तालू से चिपक गई; और तू मुझे मारकर मिट्टी में मिला देता है'' (भजन संहिता 22:14, 15)। एक और सम्भावना है कि यह वाक्यांश अय्यूब के परमेश्वर के सामने बार-बार प्रार्थना किए जाने पर संकेत है, हन्ना की तरह जिसने ''अपने मन की बात खोलकर यहोवा को कही'' (1 शमूएल 1:15)। एक अंतिम विकल्प यह है कि आशा की अत्यधिक भावनात्मक स्थिति से जुड़ी है। भजनकार ने कहा, ''मैं भीड़ के संग जाया करता था, मैं जयजयकार और धन्यवाद के साथ उत्सव करनेवाली भीड़ के बीच में परमेश्वर के भवन को धीरे धीरे जाया करता था; यह स्मरण करके मेरा प्राण शोकित हो जाता है'' (भजन संहिता 42:4)। बेशक अय्यूब की बिगड़ रही शारीरिक अवस्था, परमेश्वर के सामने गिड़गिड़ाकर की गई उसकी प्रार्थनाएं, और उसकी भावनात्मक स्थिति सबका आपस में मिलना था।

''दु:ख के दिनों ने मुझे जकड़ लिया है। रात को मेरी हड्डियाँ मेरे अन्दर छिद जाती हैं और मेरी नसों में चैन नहीं पड़ता।'' ''दु:ख के दिनों'' और ''रात को'' वाक्यांश अय्यूब के दु:ख में रहने का संकेत देते हैं जिससे उसे कोई राहत नहीं थी। उसकी ''नसों में चैन'' नहीं था। रेबर्न ने लिखा, ''*चैन नहीं पड़ता* का अनुवाद क्रिया शब्द [*shakab, शाकाब*] से किया गया है जिसका अर्थ है सोने के उद्देश्य से 'लेटना,' अर्थात 'बिस्तर पर जाना' या 'सोना।' यहां इस अभिव्यक्ति का इस्तेमाल प्रतीकात्मक अर्थ में किया गया है।''[18]

अय्यूब के दर्द को केवल वही लोग समझ सकते हैं जो स्वयं भयंकर पीड़ा में से गुजरे हों। इससे तसल्ली देने वालों को ऐसी निरन्तर पीड़ा सह रहे लोगों को प्रार्थना करने के लिए कहने के हिचकिचाहट होनी चाहिए।

आयत 18. ''मेरी बीमारी की बहुतायत से मेरे वस्त्र का रूप बदल गया है; वह मेरे कुर्त्ते के गले के समान मुझ से लिपटी हुई है।'' इस आयत के सही सही अनुवाद और व्याख्या पर विवाद है। आयत 19 के आधार पर कई संस्करणों में परमेश्वर के करीब बताया गया (ASV; TEV; NIV; NRSV; NJB; NCV; CEV; NLT)। अपने शरीर के कष्टों के कारण जो उस पर पड़े थे अय्यूब अपने बदले हुए चेहरे की बात कर रहा होगा। क्रिया शब्द ''रूप बदल गया है'' मूल शब्द *chapaś* (*चापास*) है, जिसके गहन रूप का अर्थ ''रूप बदलना'' (1 शमूएल 28:8; 1 राजाओं 20:38; 22:30; 2 इतिहास 18:29; 35:22)। जब मित्र अय्यूब के पास पहली बार उसे तसल्ली देने के लिए आए थे तो वह ''उसे पहचान न सके'' (2:12)।

आयत 19. यह आयत उस अपमान को दिखाती है जो अय्यूब ने महसूस किया। वह न केवल ''राख के ढेर पर बैठ गया'' था (2:8), बल्कि वह अपने आपको **मिट्टी और राख** जैसा बेकार मानता था। पूरी पुस्तक में ''मिट्टी'' मनुष्य की मृत्यु और गाड़े जाने से जोड़ा गया है (10:9; 17:16; 20:11; 21:26; 34:15)। आल्डन ने कहा कि ''मिट्टी और राख'' का मेल 42:6 में अय्यूब के मन फिराव का विचार भी मिलता है जहां दोनों शब्द फिर से इकट्ठे होते हैं।[19]

आयतें 20-23. पुस्तक में अय्यूब अकेला बोलने वाला था जिसमें सीधे परमेश्वर को

सम्बोधित किया और उसने इन आयतों में ऐसा किया। वह परमेश्वर को छोड़ अपने दु:ख के पीछे किसी और चीज़ या व्यक्ति को नहीं देख पाया। परमेश्वर पर लगाए गए अय्यूब के आरोप गम्भीर थे:

1. अय्यूब ने परमेश्वर पर अपनी हताश पुकार पर ध्यान न देने का इल्ज़ाम लगाया (30:20; देखें 19:7)। **खड़ा हो**ना दिल से विनती करने के लिए एक मुद्रा है (30:28; यिर्मयाह 15:1)।
2. अय्यूब ने परमेश्वर पर उसके ऊपर कठोर होने का आरोप लगाया (30:21)। पहले परमेश्वर अय्यूब के साथ करुणापूर्वक व्यवहार करता था परन्तु अब उसने निरंकुश शासक की तरह उससे दुशमनी लेने की तरह उसे कुचल दिया था (देखें 16:9)।
3. अय्यूब ने परमेश्वर पर उसे एक दुष्ट व्यक्ति की तरह अन्यायपूर्ण ढंग से दण्ड देने का अरोप लगाया (30:22), जो "वायु से उड़ाए हुए भूसे" और "बवंडर से उड़ाई हुई भूसी" के जैसा है (21:18)। हार्टले ने सुझाव किया कि अय्यूब "भजनों की भाषा की नकल उड़ा रहा था जो परमेश्वर को अपने लोगों को छुड़ाने के लिए पवन के पंखों पर सवार होकर आने को दिखाता है" (देखें भजन संहिता 18:10)।[20]
4. अय्यूब ने परमेश्वर पर उसे मरने के लिए छोड़ देने का आरोप लगाया (30:23)। **उस घर में जो सब जीवित प्राणियों के लिए ठहराया गया है** शियोन या अधोलोक को कहा गया है (17:13), जो सारी मनुष्यजाति की नियति है।

आल्डन ने कहा, "प्रार्थना पुस्तक की सबसे निराशाजनक टिप्पण के साथ खत्म होती है।"[21]

कुछ लोग जल्दी से अय्यूब पर बेईमान होने का आरोप लगाने लगते हैं। परन्तु एल्बर्ट बार्नस ने लिखा है, "परमेश्वर की प्रेरणा जिस बात के लिए ज़िम्मेदार है वह उसकी भावनाओं का निष्पक्ष रूप में दर्ज किया जाना है; और यह कि हम पर दु:ख आने पर जो कुछ हमारे साथ होता है उसके साथ मेल खाने वाली उसकी आशाएं और भय होने चाहिए थें।"[22]

"मैं शोक का पहरावा पहने हुए हूं" (30:24–31)

24"तौभी क्या कोई गिरते समय हाथ न बढ़ाएगा, और क्या कोई विपत्ति के समय दोहाई न देगा? 25क्या मैं उसके लिये रोता नहीं था, जिसके दुर्दिन आते थे? क्या दरिद्र जन के कारण मैं प्राण में दु:खित न होता था? 26जब मैं कुशल का मार्ग जोहता था, तब विपत्ति आ पड़ी; और जब मैं उजियाले की आशा लगाए था, तब अन्धकार छा गया। 27मेरी अन्तड़ियाँ निरन्तर उबलती रहती हैं और आराम नहीं पातीं; मेरे दु:ख के दिन आ गए हैं। 28मैं शोक का पहिरावा पहिने हुए मानो बिना सूर्य की गर्मी के काला हो गया हूँ। मैं सभा में खड़ा होकर सहायता के लिये दोहाई देता हूँ। 29मैं गीदड़ों का भाई, और शुतुर्मुर्गों का संगी हो गया हूँ। 30मेरा चमड़ा काला होकर मुझ पर से गिरता जाता है, और ताप के मारे मेरी हड्डियाँ जल गई हैं। 31इस कारण मेरी वीणा से विलाप और मेरी बाँसुरी से रोने की ध्वनि निकलती है।"

आल्डन ने टिप्पणी की, "आठ आयतों वाला विलाप नगर के सबसे बदनाम निकाले हुए लोगों और

परमेश्वर की ओर से अय्यूब के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार के इस बयान के साथ खत्म हो जाता है।''[23]

आयत 24. **''तौभी क्या कोई गिरते समय हाथ न बढ़ाएगा, और क्या कोई विपत्ति के समय दोहाई न देगा?''** अय्यूब वास्तव में राख के खण्डहरों के ढेर पर खड़ा था (2:8)। परन्तु ''गिरते समय'' ''विनाश'' का समानांतर शब्द है और प्रतीकात्मक रूप में इसका अर्थ अय्यूब के जीवन के लिए है जो बर्बाद हो चुका था। उसने ''हाथ बढ़ाया'' था और ''दोहाई'' दी थी पर यहां पर न तो उसके मित्रों ने, न भीड़ ने, न परमेश्वर ने किसी ने उसकी सहायता नहीं की।

आयत 25. अय्यूब उनके लिए ''जो परेशानी'' में होते थे (KJV; NIV; NLT) **रोता** था और **दरिद्र जन के कारण दु:खी होता था**। उसने दूसरों पर करुणा की थी (29:12–17), पर बदले में उस पर किसी ने करुणा नहीं की।

आयत 26. अय्यूब को उससे उल्टा मिला था जिसकी उसे उम्मीद थी यानी **कुशल** की जब उसे **विपत्ति** मिली और **उजियाले** की जगह **अंधकार** मिला। रोअले ने लिखा है, ''अय्यूब जहां मित्रों के इस विचार पर झगड़ता है कि भलाई करने से प्रशंता मिलती है, वहीं वह उनके साथ इस विचार को साझा करता है कि यह मिलनी चाहिए। उसकी उदार सहानुभूति उसे यह आश्वासन देती है कि उसकी प्रसन्नता बरकरार रहेगी। पर ऐसा नहीं हुआ।''[24]

आयत 27. अय्यूब की **अन्तड़ियाँ उबलती रहती** थीं (NASB – अनुवादक) ''अंदर खौलती हुई'' है। KJV ''अन्तड़ियों'' का इस्तेमाल आम तौर पर मनुष्य के मनोभाव के लिए किया जाता है। CEV में है ''मेरे पेट में गांठें पड़ी हुई हैं'' और NKJV में कहा गया है ''मेरा दिल बेचैन है।'' अय्यूब की भीतरी कसमकश उसे **आराम** नहीं करने देती थी। और तो और अपने **दु:ख के दिनों** में उसे चैन नहीं मिला।

आयत 28. **''मैं शोक का पहिरावा पहिने हुए मानो बिना सूर्य की गर्मी के काला हो गया हूँ। मैं सभा में खड़ा होकर सहायता के लिये दोहाई देता हूँ।''** (देखें RSV; NCV; NIV)। क्रिया शब्द ''काला हो गया है'' (*qadar, क़ादार*) ''शोक करने'' का प्रतिकात्मक शब्द हो सकता है (5:11)। यह सम्बन्ध शायद इसलिए बना क्योंकि शोक करने वाले लोग आम तौर पर टाट पहना करते थे और नहाते नहीं थे।[25] अपनी निराशा और दु:ख में से अय्यूब ने ''सहायता के लिए'' दोहाई दी पर उसकी पुकार को किसी ने नहीं सुना। हार्टले ने लिखा है, ''अय्यूब को अपने रोग के कारण सार्वजनिक सभा में जाने से मना किया गया होगा, इस कारण दूसरी पंक्ति की भाषा राख के ढेर पर सार्वजनिक रूप में विलाप करने के उसके निश्चय के वर्णन के लिए प्रतिकात्मक है।''[26]

आयत 29. अय्यूब सामाजिक रूप में बहिष्कृत हो गया था जो **गीदड़ों का भाई, और शुतुर्मुर्गों का संगी** था। ''गीदड़'' और ''शुतुर्मुर्ग'' वे जीव थे जो सुनसान जगहों में रहते थे (यशायाह 34:13; 43:20; यिर्मयाह 50:39; विलापगीत 4:3)। दोनों दु:ख भरी आवाजें निकाले के लिए प्रसिद्ध थे (मीका 1:8)।

आयत 30. **''मेरा चमड़ा काला होकर मुझ पर से गिरता जाता है, और ताप के मारे मेरी हड्डियाँ जल गई हैं।''** आल्डन ने टिप्पणी की है:

> अय्यूब की बीमारी के इन अंतिम लक्षण दूसरे लोगों की नज़र में उसकी अत्यधिक शरीर की पीड़ा को वर्णन करने वाले होने चाहिए। उसके पूरे शरीर पर खुजली और पीप से भरे

फोड़े (7:5), कुपोषण (17:7; 19:20), डरावनी सूरत (19:19), सांसों में से बदबू (19:17), और दिन रात पीड़ा थी (30:17)।[27]

आयत 31. ''इस कारण मेरी वीणा से विलाप और मेरी बाँसुरी से रोने की ध्वनि निकलती है।'' ''वीणा'' और ''बांसुरी'' का सम्बन्ध आम तौर पर आनन्द भरे अवसरों के साथ जोड़ा जाता था (21:12; 1 राजाओं 1:40; भजन संहिता 33:2; 57:8; 81:2; यशायाह 30:29), परन्तु यहां पर इन वाद्य-यन्त्रों का सम्बन्ध ''विलाप'' और ''रोने'' के साथ है। ये अपने दुःख के बारे में अय्यूब के अंतिम शब्द हैं। उसे ''उसे करुणा की बात या मित्रता की स्पष्टता से राहत नहीं मिलती थी।''[28]

प्रासंगिकता

''हे प्रभु, मैं ही क्यों?'' (अध्याय 30)

हम सब ने यह प्रश्न पूछा है, ''हे प्रभु, मैं ही क्यों?'' शायद किसी दूसरे ने हम से कुछ ऐसा कहा या हमारे साथ किया जो विनाशकारी था। हो सकता है कि हमें किसी ईनाम या तरक्की देने के समय जिसके लिए हमें लगता था कि हम हक्कदार हैं, खासकर तब जब हमने इसके लिए बहुत देर तक मेहनत की, नज़रअन्दाज़ कर दिया गया। कई लोग चोरी के शिकार हुए हैं या हमारी सम्पत्ति किसी प्राकृतिक आपदा से नष्ट हो गई। शायद हम में से किसी को कोई भयानक बीमारी हो गई या गाड़ी के एक्सिडेंट में हमें बहुत चोट लग गई। जब हमें ऐसी परिक्षाओं का सामना करना पड़ता है तो हम अक्सर पूछते हैं, ''हे प्रभु, मैं ही क्यों?''

अध्याय 30 में अय्यूब ने यही प्रश्न पूछा था, ''हे प्रभु, मैं ही क्यों'' यह अध्याय निराशाजनक विलाप है जो हमें अय्यूब के अत्यधिक कष्ट की समझ देता है। उसके दुःख को देखकर हमें तीन सवाल उठाने चाहिए जो मसीही लोगों के लिए प्रासंगिक हैं।

अन्याय क्यों होता है? (30:1-10)। अय्यूब चाहे दबे-कुचले लोगों के साथ बड़ी करुणा से पेश आता था (अध्याय 29), पर उसके अपने दुःख के समय में उसे कोई शांति या सहानुभूति नहीं मिली। इसके बजाय अय्यूब का मज़ाक मामुली से लोगों के द्वारा किया गया ''जिनके पिताओं को [वह] अपनी भेड़ बकरियों के कुत्तों के काम के योग्य भी न जानता था'' (30:1)। सामाजिक रूप से निकले गए ये लोग उस पर व्यंग भरे गीत बनाकर और उसके मुंह पर थूककर उसकी परेशानियों को बढ़ा रहे थे (30:9, 10)। अय्यूब को समझ नहीं आया कि परमेश्वर ने उसके साथ ऐसा क्यों होने दिया।

हम आम तौर पर जीवन के होने वाले अन्यायों से परेशान हो जाते हैं। कई बार हमारे बच्चे शिकायत करते हैं, ''जीवन में हमारे साथ न्याय नहीं हो रहा।'' अन्याय इसलिए होता क्योंकि हम पाप से दूषित हुए संसार में रहते हैं जिसमें इसके परिणाम भुगतने पड़ते हैं। लोग करुणा के हमारे कार्यों को हर बार सराहते नहीं हैं और न ही वे बदले में हमारा समर्थन करते हैं। हो सकता है कि हम बार-बार भलाई करते रहें पर दुष्ट लोग हमारा केवल मज़ाक ही उड़ाएं। फिर भी एक दिन हिसाब होगा जब परमेश्वर सब कुछ ठीक कर देगा। पौलुस ने लिखा है, ''क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के साम्हने खुल जाए, कि हर एक

व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उस ने देह के द्वारा किया हों पाए'' (2 कुरिन्थियों 5:10)। पौलुस ने सताव सहने वाले विश्वासियों को यह भी आश्वासन दिया, ''क्योंकि परमेश्वर के निकट यह न्याय है कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं, उन्हें बदले में क्लेश दे। और तुम्हें, जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; उस समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा'' (2 थिस्सलुनीकियों 1:6, 7)।

क्या परमेश्वर हमारे विरुद्ध है? (30:11-23)। अय्यूब ने यह मान लिया कि परमेश्वर ने उसे निशाना बनाते हुए अपना कमान उसकी ओर कस लिया है (30:11)। अय्यूब को यह भी लगा कि वह एक ऐसे नगर की तरह है जिस पर किसी विदेशी सेना ने हमला कर दिया हो (30:12-14)। उसे यह समझ नहीं आया कि उस पर इतने दु:ख क्यों आए हैं कि वह मरने को है (30:16-19)। अय्यूब ने इस बात पर विलाप किया कि परमेश्वर ने उसकी मायूस विपत्तियों का उत्तर नहीं दिया: ''मैं तेरी दोहाई देता हूँ, परन्तु तू नहीं सुनता; मैं खड़ा होता हूँ परन्तु तू मेरी ओर घूरने लगता है'' (30:20)। अय्यूब को लगा कि परमेश्वर उससे ऐसे बर्ताव कर रहा है जैसे वह कोई दुष्ट व्यक्ति है। अय्यूब ने आरोप लगाया कि वह ''तू बदलकर मुझ पर कठोर हो गया है; और अपने बली हाथ से मुझे सताता है'' (30:21)।

हमें याद रखना आवश्यक है कि परमेश्वर हमारे विरोध में नहीं है। हमारी मानवीय प्रवृत्ति ऐसी है कि हम अपने दु:खों के लिए परमेश्वर पर आरोप लगाने लगते हैं। इसके बजाय हमें नाश करने की इच्छा शैतान की होती है, बिल्कुल वैसे जैसे उसने अय्यूब और परमेश्वर के साथ उसके सम्बन्ध को बर्बाद करना चाहा था। यही अंतर यीशु ने किया था: ''चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है; मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं'' (यूहन्ना 10:10)। शैतान हमें बर्बाद करना चाहता है परन्तु यीशु हमें परमेश्वर के द्वारा बहुतायत का जीवन देना चाहता है। पौलुस ने कहा, ''यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?'' (रोमियों 8:31)। जब हम अपने लिए परमेश्वर के प्रेम पर संदेह करते हैं तो हमें केवल क्रूस की ओर पीछे मुड़कर देखना और यीशु मसीह के स्थान पर ध्यान देना आवश्यक होता है।

क्या हम सचमुच में अकेले हैं? (30:24-31)। अय्यूब की दुर्दशा ने केवल उसके शारीरिक स्वास्थ्य को ही नहीं बल्कि मानसिक सेहत को भी प्रभावित किया है। उसे यह समझ नहीं आ पाया कि उसकी करुणा का बदला क्यों नहीं दिया गया था (30:25)। ''कुशल'' और ''उजियाले'' की उसकी आशाएं ''विपत्ति'' और ''अंधकार'' से धूमिल हो गईं (30:26)। उसके मन की बेचैनी उसे चैन या आराम नहीं लेने देती (30:27)। वह अपने आपको अकेला और असहाय समझता था (30:28, 29)। परन्तु चाहे उसका जीवन उलटा-पुलटा हो गया था, फिर भी परमेश्वर उसके साथ था।

कई बार हमें लग सकता है कि हम अकेले हैं, पर परमेश्वर फिर भी हमारे साथ होता है। उसने वायदा किया है, ''तुम्हारा स्वभाव लोभरहित हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर सन्तोष करो; क्योंकि उसने आप ही कहा है, मैं तुझे कभी न छोडूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा'' (इब्रानियों 13:5)। यीशु ने कहा, ''और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूं'' (मत्ती 28:20)। पवित्र शास्त्र यह भी बताता है कि पवित्र आत्मा विश्वासियों में वास करता है यानी वह भी हमारे साथ है

(1 कुरिन्थियों 6:19)। कई बार हमारे अंदर, ''एलिय्याह वाले लक्षण'' आ जाते हैं जिससे हमें लगने लगता है कि हम ही हैं जो सही काम करने की कोशिश कर रहे हैं या किसी विशेष प्रकार से केवल हम ही दु:ख उठा रहे हैं। एलिय्याह नबी को भी लगा था कि इस्राएल में विद्रोही लोगों ने परमेश्वर के सभी अन्य विश्वास योग्य नबियों को मार डाला है। दो बार उसने परमेश्वर से कहा, ''मैं ही अकेला रह गया हूं'' (1 राजाओं 19:10, 14)। निश्चय ही एलिय्याह को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि सात हज़ार लोग और थे जिन्होंने बाल के आगे घुटने नहीं टेके थे (1 राजाओं 19:18)। कई बार यह पता चलने पर कि दूसरे लोगों पर भी वही परेशानियां और मुसीबतें हैं जिनका सामना हम कर रहे होते हैं। पौलुस ने लिखा, ''तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य केसहने से बाहर है'' (1 कुरिन्थियों 10:13)। पतरस ने लिखा कि ''विश्वास में दृढ़ होकर, और यह जानकर उसका सामना करो, कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं, ऐसे ही दु:ख सह रहे हैं'' (1 पतरस 5:9)।

सारांश। हो सकता है कि जब हम यह प्रश्न करते हैं कि ''हे प्रभु, मैं ही क्यों?'' तो हमें इसका उत्तर न मिले। परन्तु हमें पाप भरे संसार में धर्म के काम करते रहने के लिए बुलाया गया है। हमें यह याद रखना आवश्यक है कि परमेश्वर हमारे विरुद्ध नहीं है बल्कि शैतान इस खोज में कि हमें नाश कर डाले हमारे आस पास मंडराता रहता है (1 पतरस 5:8)। वास्तव में, परमेश्वर हमारे साथ है। हमें अपनी विपत्तियों का सामना करने और दुष्ट से उसकी सुरक्षा के लिए उसकी सामर्थ के लिए प्रार्थना करनी चाहिए (मत्ती 6:13)। हमें मसीह में अपने भाइयों और बहनों से भी सामर्थ और समर्थन ढूंढ़ना चाहिए (गलातियों 6:2)। डी. स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 241. [2]नॉर्मन सी. हेबल, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द कैम्ब्रिज बाइबल कॉमैंट्री (कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, 1975), 156. [3]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 287. [4]रोअले, 241. [5]फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमैंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1974), 235. [6]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, *द हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 2:1041. [7]वहीं, 2:1315-16. [8]वहीं, 1:194. [9]जॉन ई. हार्टले, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 398. [10]विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992), 541.

[11]हार्टले, 398. [12]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 257. [13]कोहलर और बामगार्टनर, 1:668. [14]आल्डन, 290. [15]हार्टले, 400. [16]एंडरसन, 236. [17]हार्टले, 402. [18]रेबर्न, 549. [19]आल्डन, 293. [20]हार्टले, 403.

[21]आल्डन, 294. [22]ऐल्बर्ट बार्नस, *अय्यूब,* नोट्स, ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट, सम्पा. रॉबर्ट फ्रू (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1950), 2:95. [23]आल्डन, 295. [24]रोअले, 250-51. [25]कोहलर और बामगार्टनर, 2:1072. [26]हार्टले, 406. [27]आल्डन, 297. [28]एंडरसन, 238.